श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

एकोनत्रिंशः अध्यायः

दशमः स्कन्धः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— भगवानपि ता रात्रीः शरदोत्फुल्लमल्लिकाः ।
वीक्ष्य रन्तुं मनश्चक्रे योगमायामुपाश्रितः ॥१॥

पदच्छेद— भगवान् अपि ताः रात्रीः शरदा उत्फुल्ल मल्लिकाः ।
वीक्ष्य रन्तुम् मनः चक्रे योगमायाम् उपाश्रितः ॥

शब्दार्थ—

भगवान्	१. भगवान् ने	वीक्ष्य	५. देखा जिनमें
अपि	२. भी	रन्तुम्	१०. रास क्रीडा करने का
ताः रात्रीः	४. उन रात्रियों को	मनः	११. मन में
शरदा	३. शरद् ऋतु की	चक्रे	१२. विचारा
उत्फुल्ल	७. खिल रहे थे (उन्होंने)	योगमायाम्	८. योग माया का
मल्लिकाः ।	६. बेला, चमेली के पुष्प	उपाश्रितः ॥	९. आश्रय लेकर

श्लोकार्थ—भगवान् ने भी शरद् ऋतु की उन रात्रियों को देखा, जिनमें बेला, चमेली के पुष्प खिल रहे थे। उन्होंने योगमाया का आश्रय लेकर रास क्रीडा करने का मन में विचारा ॥

द्वितीयः श्लोकः

तदोडुराजः ककुभः करैर्मुखं प्राच्या विलिम्पन्नरुणेन शन्तमैः ।
स चर्षणीनामुदगाच्छुचो मृजन् प्रियः प्रियाया इव दीर्घदर्शनः ॥२॥

पदच्छेद— तदा उडुराजः ककुभः करैः मुखम् प्राच्या विलिम्पन् अरुणेन शन्तमैः ।
सः चर्षणीनाम् उदगात् शुचः मृजन् प्रियः प्रियायाः इव दीर्घदर्शनः ॥

शब्दार्थ—

तदा उडुराजः	१. उस समय चन्द्रदेव ने	सः	१२. वैसे ही चन्द्रदेव ने
ककुभः	६. दिशा के	चर्षणीनाम्	१४. लोगों के
करैः	४. किरणों से	उदगात्	१३. उदित होकर
मुखम्	७. मुख पर	शुचः	१५. ताप-दुःख को
प्राच्या	५. प्राची	मृजन्	१६. दूर कर दिया
विलिम्पन्	८. रोली मल दी	प्रियः प्रियायाः	१०. प्रियतम ने अपनी प्रिया को
अरुणेन	३. रक्तिम	इव	९. जैसे
शन्तमैः ।	२. अपनी शीतल और	दीर्घदर्शनः ॥	११. बहुत समय बाद दर्शन देकर प्रसन्न किया हो

श्लोकार्थ—उस समय चन्द्रदेव ने अपनी शीतल और रक्तिम किरणों से प्राची दिशा के मुख पर रोली मल दी। जैसे प्रियतम ने अपनी प्रिया को बहुत समय बाद दर्शन देकर प्रसन्न किया हो। वैसे ही चन्द्रदेव ने उदित होकर लोगों के ताप-दुःख को दूर कर दिया ॥

तृतीयः श्लोकः

दृष्ट्वा कुमुद्वन्तमखण्डमण्डलं रमाननाभं नवकुङ्कुमारुणम् ।
वनं च तत्कोमलगोभिरञ्जितं जगौ कलं वामदृशां मनोहरम् ॥३॥

पदच्छेद— दृष्ट्वा कुमुदवन्तम् अखण्ड मण्डलम् रमाननाभम् नव कुङ्कुम अरुणम् ।
वनम् च तत्कोमल गोभिः रञ्जितम् जगौ कलम् वामदृशाम् मनोहरम् ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	१२. ऐसा देख कर	वनम् च	८. और सारा वन
कुमुदवन्तम्	३. कुमुद के समान विकसित तथा	तत्कोमल	९. उसकी कोमल
अखण्ड	४. अखण्ड था	गोभिः	१० किरणों से
मण्डलम्	२. चन्द्रदेव का मण्डल	रञ्जितम्	११. लाल था ।
रमाननाभम्	१. लक्ष्मी के मुख के समान आभावाले	जगौ	१६. ध्वनि छेड़ दी
नव	५. नवीन	कलम्	१३. उन्होंने सुन्दर और
कुङ्कुम	६. केसर के समान	वामदृशाम्	१४. व्रज सुन्दरियों के लिये
अरुणम् ।	७. लाल हो रहा था	मनोहरम् ॥	१५. मन को हरने वाली

श्लोकार्थ—लक्ष्मी के मुख के समान आभा वाले चन्द्रदेव का मण्डल कुमुद के समान विकसित तथा अखण्ड था । नवीन केसर के समान लाल हो रहा था । और सारा वन उसकी कोमल किरणों से लाल था । ऐसा देख कर उन्होंने सुन्दर और व्रज सुन्दरियों के लिये मन हरने वाली ध्वनि छेड़ दी ॥

चतुर्थः श्लोकः

निशम्य गीतं तदनङ्गवर्धनं व्रजस्त्रियः कृष्णगृहीतमानसाः ।
आजग्मुरन्योन्यमलक्षितोद्यमाः स यत्र कान्तो जवलोलकुण्डलाः ॥४॥

पदच्छेद— निशम्य गीतम् तत् अनङ्ग वर्धनम् व्रजस्त्रियः कृष्णगृहीत मानसाः ।
आजग्मुः अन्योन्यम् अलक्षित उद्यमाः सः यत्र कान्तः जवलोल कुण्डलाः ॥

शब्दार्थ—

निशम्य	७. सुना (और)	आजग्मुः	१२. पास चल दीं उस समय
गीतम् तत्	६. उस वंशी की ध्वनि को	अन्योन्यम्	९. परस्पर एक दूसरे से
अनङ्ग	४. कामभाव को	अलक्षित	१०. छिपाती हुई
वर्धनम्	५. बढ़ाने वाली ऐसी	उद्यमाः	८. वे अपनी चेष्टा को
व्रजस्त्रियः	३. व्रज की स्त्रियों ने	सः यत्र कान्तः	११. अपने उन परम प्रियतम के
कृष्णगृहीत	२. श्रीकृष्ण ने चुरा लिये थे	जवलोल	१४. वेग के कारण हिल रहे थे
मानसाः ।	१. जिनके मन	कुण्डलाः ॥	१३. उनके कुण्डल

श्लोकार्थ—जिनके मन श्रीकृष्ण ने चुरा लिये थे । व्रज की स्त्रियों ने कामभाव को बढ़ाने वाली ऐसी उस वंशी की ध्वनि को सुना । और वे अपनी चेष्टा को परस्पर एक दूसरे से छिपाती हुई अपने उन प्रियतम के पास चल दीं । उस समय उनके कुण्डल वेग के कारण हिल रहे थे ॥

पञ्चमः श्लोकः

दुहन्त्योऽभिययुः काश्चिद् दोहं हित्वा समुत्सुकाः ।
पयोऽधिश्रित्य संयावमनुद्वास्यापरा ययुः ॥५॥

पदच्छेद— दुहन्त्यः अभिययुः काश्चित् दोहम् हित्वा समुत्सुकाः ।
पयः अधिश्रित्य संयावम् अनुद्वास्य अपराः ययुः ॥

शब्दार्थ—

दुहन्त्यः	२. दूध दूह रही थीं	पयः	८. उफनता हुआ दूध
अभिययुः	६. चल पड़ीं	अधिश्रित्य	६. छोड़कर और कोई
काश्चित्	१. कोई गोपी	संयावम्	१०. लपसी
दोहम्	३. कोई दूध औंटा रही थी	अनुद्वास्य	११. बिना उतारे ही
हित्वा	४. सब कुछ छोड़कर	अपराः	७. अन्य कोई
समुत्सुकाः ।	५. वे उत्सुकता वश	ययुः ॥	१२. चल पड़ीं

श्लोकार्थ—कोई गोपी दूध दूह रही थीं । कोई दूध औंटा रही थीं । सब कुछ छोड़ कर वे उत्सुकता वश चल पड़ीं । अन्य कोई उफनता हुआ दूध छोड़कर और कोई लपसी बिना उतारे ही चल पड़ीं ॥

षष्ठः श्लोकः

परिवेषयन्त्यस्तद्धित्वा पाययन्त्यः शिशून् पयः ।
शुश्रूषन्त्यः पतीन् काश्चिदश्नन्त्योऽपास्य भोजनम् ॥६॥

पदच्छेद— परिवेषयन्त्यः तत् हित्वा पाययन्त्यः शिशून् पयः ।
शुश्रूषन्त्यः पतीन् काश्चित् अश्नन्त्यः अपास्य भोजनम् ॥

शब्दार्थ—

परिवेषयन्त्यः	१. भोजन परोसने वाली	शुश्रूषयन्त्यः	८. सेवा करने वाली
तत्	२. उस भोजन को	पतीन्	७. अपने पति की
हित्वा	३. छोड़कर	काश्चित्	६. अन्य कोई सेवा छोड़कर
पाययन्त्यः	६. पिलाने वाली (उसे छोड़कर)	अश्नन्त्यः	१०. भोजन करती हुई
शिशून्	४. बच्चों को	अपास्य	१२. छोड़कर चल पड़ीं
पयः ।	५. दूध	भोजनम् ॥	११. भोजन को

श्लोकार्थ—भोजन परोसने वाली उस भोजन को छोड़कर, बच्चों को दूध पिलाने वाली उसे छोड़कर, अपने पति की सेवा करने वाली अन्य कोई सेवा छोड़कर, और भोजन करती हुई भोजन को छोड़कर, चल पड़ीं ॥

सप्तमः श्लोकः

लिम्पन्त्यः प्रमृजन्त्योऽन्या अञ्जन्त्यः काश्च लोचने ।
व्यत्यस्तवस्त्राभरणाः काश्चित् कृष्णान्तिकं ययुः ॥७॥

पदच्छेद— लिम्पन्त्यः प्रमृज्यन्त्यः अन्याः अञ्जन्त्यः काश्च लोचने ।
व्यत्यस्त वस्त्राभरणाः कश्चित् कृष्ण अन्तिकम ययुः ॥

शब्दार्थ—

लिम्पन्त्यः	१. कोई लीपती हुई	व्यत्यस्त	९. उलटे-पलटे धारण करके
प्रमृजन्त्या	३. उबटन करती हुई	वस्त्राभरणाः	८. वस्त्र और आभूषण
अन्याः	२. अन्य कोई गोपी	काश्चित्	७. कोई
अञ्जन्त्यः	६. अञ्जन लगाती हुई	कृष्ण	१०. श्रीकृष्ण के
काश्च	४. अन्य कोई	अन्तिकम्	११. पास
लोचने ।	५. अपने नेत्रों में	ययुः ॥	१२. जा पहुँचीं

श्लोकार्थ—कोई लीपती हुई, अन्य कोई गोपी उबटन करती हुई, अन्य कोई अपने नेत्रों में अञ्जन लगाती हुई और कोई वस्त्र एवं आभूषण उलटे-पलटे धारण करके श्रीकृष्ण के पास जा पहुँची ॥

अष्टमः श्लोकः

ता वार्यमाणाः पतिभिः पितृभिर्भ्रातृबन्धुभिः ।
गोविन्दापहृतात्मानो न न्यवर्तन्त मोहिताः ॥८॥

पदच्छेद— ताः वार्यमाणाः पतिभिः पितृभिः भ्रातृ बन्धुभिः ।
गोविन्द अपहृत आत्मानः न न्यवर्तन्त मोहिताः ॥

शब्दार्थ—

ताः	१. वे	गोविन्द	१०. श्रीकृष्ण ने
वार्यमाणाः	६. रोके जाने पर भी	अपहृत	१२. हरण कर लिया था
पतिभिः	२. अपने पतियों	आत्मानः	११. उनके प्राण मन और आत्मा का
पितृभिः	३. पिताओं	न	७. नहीं
भ्रातृ	४. भाई और	न्यवर्तन्त	८. लौटीं । वे
बन्धुभिः ।	५. बन्धुओं के द्वारा	मोहिताः ॥	९. श्रीकृष्ण पर मोहित थीं क्योंकि

श्लोकार्थ—वे अपने पतियों, पिताओं, भाई और बन्धुओं के द्वारा रोके जाने पर भी नहीं लौटीं । वे श्रीकृष्ण पर मोहित थीं । क्योंकि श्रीकृष्ण ने उनके प्राण, मन और आत्मा का हरण कर लिया था ॥

नवमः श्लोकः

अन्तर्गृहगताः काश्चिद् गोप्योऽलब्धविनिर्गमाः ।
कृष्णं तद्भावनायुक्ता दध्युर्मीलितलोचनाः ॥९॥

पदच्छेद— अन्तः गृह गताः काश्चिद् गोप्यः अलब्ध विनिर्गमाः ।
कृष्णम् तत् भावना युक्ताः दध्युः मीलित लोचनाः ॥

शब्दार्थ—

अन्तः	४. भीतर थीं	कृष्णम्	९. श्रीकृष्ण की
गृह	३. घर के	तत्	८. उसने
गताः	५. उसे	भावना	१०. भवना से
काश्चित्	१. कोई	युक्ताः	११. भावित होकर
गोप्यः	२. गोपी	दध्युः	१४. वहीं ध्यान लगाया
अलब्ध	७. नहीं मिला	मीलित	१३. बन्द करके
विर्गमाः ।	६. बाहर निकलने का मार्ग	लोचनाः ॥	१२. अपने नेत्र

श्लोकार्थ—कोई गोपी घर के भीतर थीं । उन्हें बाहर निकलने का मार्ग नहीं मिला । उन्होंने श्रीकृष्ण की भावना से भावित होकर अपने नेत्र बन्द करके वहीं ध्यान लगाया ॥

दशमः श्लोकः

दुःसहप्रेष्ठविरहतीव्रतापधुताशुभाः ।
ध्यानप्राप्ताच्युताश्लेषनिर्वृत्या क्षीणमङ्गलाः ॥१०॥

पदच्छेद— दुःसह प्रेष्ठ विरह तीव्र ताप धुत अशुभाः ।
ध्यान प्राप्त अच्युत आश्लेष निर्वृत्या क्षीण मङ्गलाः ॥

शब्दार्थ—

दुःसह	३. अत्यन्त कठिन	ध्यान	८. ध्यान में ही
प्रेष्ठ	१. अपने प्रियतम	प्राप्त	११. प्राप्त करके वे
विरह	२. वियोग के	अच्युत	९. श्रीकृष्ण का
तीव्र	४. भीषण	आश्लेष	१०. आलिङ्गन
ताप	५. ताप से उसके	निर्वृत्या	१२. परम आनन्दित हुईं
धुत	७. नष्ट हो गये । और	क्षीण	१४. नष्ट हो गये
अशुभाः ।	६. अशुभ संस्कार	मङ्गलाः ॥	१३. जिससे उनके अशुभ

श्लोकार्थ—अपने प्रियतम के अत्यन्त कठिन भीषण ताप से उनके अशुभ संस्कार नष्ट हो गये । और ध्यान में ही श्रीकृष्ण का आलिंगन प्राप्त करके वे परम आनिन्दत हुईं । जिससे उनके अशुभ नष्ट हो गये ॥

एकादशः श्लोकः

तमेव परमात्मानं जारबुद्ध्यापि सङ्गताः ।
जहुर्गुणमयं देहं सद्यः प्रक्षीणबन्धनाः ॥११॥

पदच्छेद— तम् एव परम आत्मानम् जारबुद्ध्या अपि सङ्गताः ।
जहुः गुणमयम् देहम् सद्यः प्रक्षीण बन्धनाः ॥

शब्दार्थ—

तम् एव	१. उन्होंने उन	जहुः	१२. छोड़ दिया
परम	२. परम	गुणमयम्	१०. इस गुणमय
आत्मानम्	३. आत्मा श्रीकृष्ण का	देहम्	११. शरीर को भी
जारबुद्ध्या	४. जारबुद्धि से	सद्यः	८. तत्काल
अपि	५. ही	प्रक्षीण	९. छोड़कर
सङ्गताः	६. आलिङ्गन किया था परन्तु	बन्धनाः	७. समस्त बन्धनों को

श्लोकार्थ— उन्होंने उन परमआत्मा श्रीकृष्ण का जारबुद्धि से ही आलिङ्गन किया था। परन्तु समस्त बन्धनों को तत्काल छोड़कर इस गुणमय शरीर को भी छोड़ दिया।

द्वादशः श्लोकः

राजोवाच—कृष्णं विदुः परं कान्तं न तु ब्रह्मतया मुने ।
गुणप्रवाहोपरमस्तासां गुणधियां कथम् ॥ १२ ॥

पदच्छेद— कृष्णम् विदुः परम् कान्तम् न तु ब्रह्मतया मुने ।
गुण प्रवाह उपरमः तासाम् गुणधियाम् कथम् ॥

शब्दार्थ—

कृष्णम्	२. उन्होंने श्रीकृष्ण को	गुण	११. गुणों के
विदुः	५. माना था	प्रवाहः	१२. प्रवाह में
परम्	३. अपना परम	उपरम	१३. आसक्ति
कान्तम्	४. प्रियतम	तासाम्	१०. उनकी
न तु	७. नही माना था। फिर	गुण	८. गुणों में ही
ब्रह्मतया	६. ब्रह्मरूप में	धियाम्	९. आसक्त
मुने	१. हे भगवन्	कथम्	१४. कैसे हुई

श्लोकार्थ— हे भगवन् ! उन्होंने ने श्रीकृष्ण को अपना परम प्रियतम माना था। ब्रह्म रूप में नहीं माना था। फिर गुणों में ही आसक्त उनको गुणों के प्रवाह में आसक्ति कैसे हुई।

त्रयोदशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—उक्तं पुरस्तादेतत्ते चैद्यः सिद्धिं यथा गतः ।
द्विषन्नपि हृषीकेशं किमुताधोक्षजप्रियाः ॥१३॥

पदच्छेद— उक्तम् पुरस्तात् एतत् ते चैद्यः सिद्धिम् यथा गतः ।
द्विषन् अपि हृषीकेशम् किम् उत अधोक्षजप्रियाः ॥

शब्दार्थ—

उक्तम्	११. कह चुका हूँ	गतः ।	७. पाया था
पुरस्तात्	६. पहले ही	द्विषन्	३. द्वेष करने पर
एतत्	८. यह कथा मैं	अपि	४. भी
ते	१०. तुमसे	हृषीकेशम्	२. भगवान् के प्रति
चैद्यः	१. चेदिराज शिशुपाल ने	किमुत	१४. क्या आश्चर्य है
सिद्धिम्	६. परमसिद्धि को	अधोक्षज	१२. फिर जो श्रीकृष्ण की
यथा	५. जिस प्रकार	प्रियाः ॥	१३. प्यारी हैं उनके बारे में

श्लोकार्थ— चेदिराज शिशुपाल ने भगवान् के प्रति द्वेष करने के कारण भी जिस प्रकार परम सिद्धि को पाया था, यह कथा मैं पहले ही तुमसे कह चुका हूँ। फिर जो श्रीकृष्ण की प्यारी हैं। उनके बारे में तो आश्चर्य ही क्या है।

चतुर्दशः श्लोकः

नृणां निःश्रेयसार्थाय व्यक्तिर्भगवतो नृप ।
अव्ययस्या प्रमेयस्य निर्गुणस्य गुणात्मनः ॥१४॥

पदच्छेद— नृणाम् निःश्रेयस अर्थाय व्यक्तिः भगवतः नृप ।
अव्ययस्य अप्रमेयस्य निर्गुणस्य गुण आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

नृणाम्	८. मनुष्यों के	अव्ययस्य	२. अविनाशी
निःश्रेयस	६. परम कल्याण के	अप्रमेयस्य	३. प्रमेय रहित
अर्थाय	१०. लिये ही	निर्गुणस्य	४. गुणों से परे और
व्यक्तिः	११. अपने को प्रकट किया है	गुण	५. गुणों के
भगवतः	७. परमात्मा ने	आत्मनः ॥	६. आश्राय
नृप	१. हे राजन्		

श्लोकार्थ— हे राजन् ! अविनाशी, प्रमेयरहित, गुणों से परे और गुणों के आश्रय परमात्मा ने मनुष्यों के कल्याण के लिये ही अपने को प्रकट किया है ॥

पञ्चदशः श्लोकः

कामं क्रोधं भयं स्नेहमैक्यं सौहृदमेव च ।
नित्यं हरौ विदधतो यान्ति तन्मयतां हि ते ॥१५॥

पदच्छेद— कामम् क्रोधम् भयम् स्नेहम् ऐक्यम् सौहृदम् एव च ।
नित्यम् हरौ विदधतः यान्ति तन्मयताम् हि ते ॥

शब्दार्थ—

कामम्	१. काम	च ।	६. और
क्रोधम्	२. क्रोध	नित्यम्	६. निरन्तर
भयम्	३. भय	हरौ	१०. श्रीकृष्ण में
स्नेहम्	४. स्नेह	विदधतः	११. लगाने से
ऐक्यम्	५. नातेदारी	यान्ति	१४. हो जाती हैं
सौहृदम्	७. सौहार्द की	तन्मयताम्	१३. भगवन्मय
एव	८. वृत्तियों को भी	हि ते ॥	१२. वे वृत्तियाँ भी

श्लोकार्थ—काम, क्रोध, भय, स्नेह, नातेदारी और सौहार्द की वृत्तियों को भी निरन्तर श्रीकृष्ण में लगाने से वे वृत्तियाँ भगवन्मय हो जाती हैं ॥

षोडशः श्लोकः

न चैवं विस्मयः कार्यो भवता भगवत्यजे ।
योगेश्वरेश्वरे कृष्णे यत एतद् विमुच्यते ॥१६॥

पदच्छेद— न च एवम् विस्मयः कार्यः भवता भगवतिअजे ।
योगेश्वर ईश्वरे कृष्णे यतः एतत् विमुच्यते ॥

शब्दार्थ—

न च	८. नहीं	योगेश्वर	२. योगेश्वरों के भी
एवम्	६. इस प्रकार का	ईश्वरे	३. ईश्वर
विस्मयः	७. कोई आश्चर्य	कृष्णे	५. श्रीकृष्ण के बारे में
कार्यः	६. करना चाहिये	यतः	१०. क्योंकि
भवता	१. आपको	एतत्	११. उनके संकेत मात्र से
भगवतिअजे ।	४. अजन्मा भगवान्	विमुच्यते ॥	१२. समस्त संसार का कल्याण हो सकता है

श्लोकार्थ—आपको योगेश्वरों के भी ईश्वर अजन्मा भगवान् श्रीकृष्ण के बारे में इस प्रकार का कोई आश्चर्य नहीं करना चाहिये । क्योंकि उनके संकेत मात्र से समस्त संसार का कल्याण हो सकता हे ॥

सप्तदशः श्लोकः

ता दृष्ट्वान्तिकमायाता भगवान् व्रजयोषितः ।
अवदद् वदतां श्रेष्ठो वाचः पेशैर्विमोहयन् ॥१७॥

पदच्छेद— ताः दृष्ट्वा अन्तिकम् आयाताः भगवान् व्रजयोषितः ।
अवदत् वदताम् श्रेष्ठः वाचः पेशैः विमोहयन् ॥

शब्दार्थ—

ताः	६. उन	अवदत्	१२. इस प्रकार कहा
दृष्ट्वा	५. देखा तो	वदताम्	७. वक्ताओं में
अन्तिकम्	३. अपने समीप	श्रेष्ठः	८. सर्वश्रेष्ठ प्रभु ने
आयाताः	४. आये हुये	वाचः	९. अपनी वाणी के
भगवान्	१. भगवान् श्रीकृष्ण ने	पेशैः	१०. चातुर्य से उन्हें
व्रजयोषितः ।	२. व्रज की सुन्दरियों को	विमोहयन् ॥	११. मोहित करते हुये

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने व्रज की सुन्दरियों को अपने समीप आये हुये देखा। तो उन वक्ताओं में श्रेष्ठ प्रभु ने अपनी वाणी के चातुर्य से उन्हें मोहित करते हुये इस प्रकार कहा ॥

अष्टादशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच— **स्वागतं वो महाभागाः प्रियं किं करवाणि वः ।**
व्रजस्यानामयं कच्चिद् ब्रूतागमनकारणम् ॥१८॥

पदच्छेद— स्वागतम् वः महाभागाः प्रियम् किम् करवाणि वः ।
व्रजस्य अनामयम् कच्चित् ब्रूत आगमन करणम् ॥

शब्दार्थ—

स्वागतम्	३. स्वागत है	व्रजस्य	७. व्रज में
वः	२. तुम्हारा	अनामयम्	९. कुशल तो है
महाभागाः	१. महाभाग्यवती गोपियों	कच्चित्	८. सब
प्रियम्	५. प्रसन्न करने के लिये	ब्रूत	१२. बतायें
किम् करवाणि	६. मैं क्या करूँ	आगमन	१०. आप यहाँ आने का
वः ।	४. तुम्हे	करणम् ॥	११. कारण

श्लोकार्थ—महाभाग्यवती गोपियो ! तुम्हारा स्वागत है। तुम्हें प्रसन्न करने के लिये मैं क्या करूँ। व्रज में सब कुशल तो है। आप यहाँ आने का कारण बतायें ॥

एकोनविंशः श्लोकः

रजन्येषा घोररूपा घोरसत्त्वनिषेविता ।
प्रतियात व्रजं नेह स्थेयं स्त्रीभिः सुमध्यमाः ॥१९॥

पदच्छेद— रजनी एषा घोररूपा घोर सत्त्व निषेविता ।
प्रतियात व्रजम् न इह स्थेयम् स्त्रीभिः सुमध्यमाः ॥

शब्दार्थ—

रजनी	३.	रात्रि	प्रतियात	१२.	लौट जाओ
एषा	२.	यह	व्रजम्	११.	व्रज में
घोररूपा	४.	बड़ी भयावनी है	न इह	६.	इस समय यहाँ नहीं
घोर	५	भयानक	स्थेयम्	१०.	रहना चाहिये अतः
सत्त्व	६.	जीव	स्त्रीभिः	८.	स्त्रियों को
निषेविता ।	७.	इसमें घूमते हैं	सुमध्यमाः ॥	१.	हे सुन्दरी गोपियों !

श्लोकार्थ—हे सुन्दरी गोपियों ! यह रात्रि बड़ी भयावनी है । भयानक जीव इसमें घूमते हैं । स्त्रियों को इस समय यहाँ नहीं रहना चाहिये । अतः व्रज में लौट जाओ ॥

विंशः श्लोकः

मातरः पितरः पुत्रा भ्रातरः पतयश्च वः ।
विचिन्वन्ति ह्यपश्यन्तो मा कृद्वं बन्धुसाध्वसम् ॥२०॥

पदच्छेद— मातरः पितरः पुत्राः भ्रातरः पतयः च वः ।
विचिन्वन्ति हि अपश्यन्तः मा कृद्वम् बन्धु साध्वसम् ॥

शब्दार्थ—

मातरः	२.	माता	विचिन्वन्ति	९.	खोज रहे होंगे (अतः)
पितरः	३.	पिता	हि अपश्यन्तः	८.	तुम्हें न देखकर
पुत्राः	४.	पुत्र	मा	१२.	मत
भ्रातरः	५.	भाई	कृद्वम्	१३.	डालो
पतयः	७.	पति	बन्धु	१०.	तुम अपने बन्धुओं को
च	६.	और	साध्वसम् ।	११.	भय में
वः ॥	१.	आपके			

श्लोकार्थ—आपके माता-पिता, पुत्र, भाई और पति तुम्हें न देखकर खोज रहे होंगे । तुम अपने बन्धुओं को भय में मत डालो ॥

एकविंशः श्लोकः

दृष्टं वनं कुसुमितं राकेशकररञ्जितम् ।
यमुनानिललीलैजत्तरुपल्लवशोभितम् ॥२१॥

पदच्छेद— दृष्टम् वनम् कुसुमितम् राकेश कर रञ्जितम् ।
यमुना अनिल लीला एजत् तरु पल्लव शोभितम् ॥

शब्दार्थ—

दृष्टम्	१२.	देखा	यमुना	४.	तथा यमुना के जल का
वनम्	११	इस वन को	अनिल लीला	५.	स्पर्श करके बहने वाली वायु के कारण
कुसुमितम्	१०.	पुष्पों से लदे	एजत्	६.	हिलते हुए
राकेश	१.	तुमने चन्द्रमा की	तरु	७.	वृक्ष के
कर	२	किरणों से	पल्लव	८.	पत्तों से
रञ्जितम् ।	३.	आरक्त	शोभितम् ॥	९.	सुशोभित और

श्लोकार्थ—तुमने चन्द्रमा की किरणों से आरक्त तथा यमुना के जल का स्पर्श करके बहने वाली वायु के कारण हिलते हुए वृक्ष के पत्तों से सुशोभित और पुष्पों से इन वन को देखा ॥

द्वाविंशः श्लोकः

तद् यात मा चिरं गोष्ठं शुश्रूषध्वं पतीन् सतीः ।
क्रन्दन्ति वत्सा बालाश्च तान् पाययत दुह्यत ॥२२॥

पदच्छेद— तत् यात मा चिरम् गोष्ठम् शुश्रूषध्वम् पतीन् सतीः ।
क्रन्दन्ति वत्साः बालाः च तान् पालयत दुह्यत ॥

शब्दार्थ—

तत्	२.	इसलिये	क्रन्दन्ति	११.	रो रहे हैं
यात	४.	जाओ	वत्साः	८.	गौओं के बछड़े
मा चिरम्	५.	देर मत करो	बालाः	१०.	तुम्हारे बालक
गोष्ठम्	३.	व्रज में	च	९.	और
शुश्रूषध्वम्	७.	सेवा करो	तान्	१२.	उन्हें
पतीन्	६.	अपने पतियों की	पालयत	१४.	उनका पालन करो
सतीः ।	१.	तुम सती साध्वी हो,	दुह्यत ॥	१३.	दुहकर दूध पिलाओ और

श्लोकार्थ—तुम सती-साध्वी हो ; इसलिये व्रज में जाओ, देर मत करो । अपने पतियों की सेवा करो। गौओं के बछड़े और तुम्हारे बालक रो रहे हैं । उन्हें दुह कर दूध पिलाओ ओर उनका पालन करो ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

अथवा मदभिस्नेहाद् भवत्यो यन्त्रिताशयाः ।
आगता ह्युपपन्नं वः प्रीयन्ते मयि जन्तवः ॥२३॥

पदच्छेद— अथवा मत् अभिस्नेहात् भवत्यः यन्त्रित आशयाः ।
आगताः अथवा हि उपपन्नम् वः प्रीयन्ते मयि जन्तवः ॥

शब्दार्थ—

अथवा	१.	अथवा यदि	आगताः	७.	यहाँ पर आई हो तो यह
मत्	२.	मुझसे	हि उपपन्नम्	६.	उचित ही है
अभिस्नेहात्	३.	प्रेम होने के कारण	वः	८.	तुम लोगों के लिये
भवत्यः	४.	आप लोग	प्रीयन्ते	१२.	स्नेह करते हैं
यन्त्रित	५.	परवश	मयि	११.	मुझसे
आशयाः ।	६.	चित्त होकर	जन्तवः ॥	१०.	संसार के समस्त प्राणी

श्लोकार्थ—अथवा यदि मुझसे प्रेम होने के कारण आप लोग परवश चित्त होकर यहाँ पर आई हो, तो यह तुम लोगों के लिये उचित ही है। संसार के समस्त प्राणी मुझसे स्नेह करते हैं ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

भर्तुः शुश्रूषणं स्त्रीणां परो धर्मो ह्यमायया ।
तद्बन्धूनां च कल्याण्यः प्रजानां चानुपोषणम् ॥२४॥

पदच्छेद— भर्तुः शुश्रूषणम् स्त्रीणाम् परः धर्मः हि अमायया ।
तत् बन्धूनाम् च कल्याण्यः प्रजानाम् च अनुपोषणम् ॥

शब्दार्थ—

भर्तुः	५.	वे पति	तत्	७.	उनके
शुश्रूषणम्	१०.	सेवा करें	बन्धूनाम्	८.	भाई बन्धुओं की
स्त्रीणाम्	२.	स्त्रियों का	च	६.	और
परः	३.	पर	कल्याण्यः	१.	हे कल्याणि गोपियो !
धर्मः	४.	धर्म यही है कि	प्रजानाम् च	११.	और सन्तान का
हि अमायया ।	६.	निष्कपट भाव से	अनुपोषणम्	१२.	पालन करें

श्लोकार्थ—हे कल्याणि गोपियो ! स्त्रियों का परम धर्म यही है कि वे पति और उनके भाई बन्धुओं की निष्कपट भाव से सेवा करें और सन्तान का पालन करें ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

दुःशीलो दुर्भगो वृद्धो जडो रोग्यधनोऽपि वा।
पतिः स्त्रीभिर्न हातव्यो लोकेप्सुभिरपातकी ॥२५॥

पदच्छेद— दुशीलः दुर्भगः वृद्धः जडः रोगी अधनः अपि वा।
पतिः स्त्रीभिः न हातव्यः लोकेप्सुभिः अपातकी ॥

शब्दार्थ—

दुशीलः	४.	बुरे स्वभाव वाले	पतिः	१०.	पति का भी
दुर्भगः	५.	भाग्यहीन	स्त्रीभिः	२.	स्त्रियों को
वृद्धः जडः	६.	वृद्ध-मूर्ख	न	११.	नहीं
रोगी	७.	रोगी	हातव्यः	१२.	त्याग करना चाहिये
अधनः	९.	निर्धन	लोकेप्सुभिः	१.	उत्तम लोक चाहने वाली
अपि वा।	८.	अथवा	अपातकी ॥	३.	पापी को छोड़कर

श्लोकार्थ—उत्तमलोक चाहने वाली स्त्रियों को पापी को छोडकर बुरे स्वभाव वाले, भाग्यहीन, वृद्ध, मूर्ख, रोगी अथवा निर्धन पति का भी त्याग नहीं करना चाहिये ॥

षड्विंशः श्लोकः

अस्वर्ग्यमयशस्यं च फल्गु कृच्छ्रं भयावहम्।
जुगुप्सितं च सर्वत्र औपपत्यं कुलस्त्रियाः ॥२६॥

पदच्छेद— अस्वर्ग्यम् अयशस्यम् च फल्गु कृच्छ्रम् भय आवहम्।
जुगुप्सितम् च सर्वत्र औपपत्यम् कुल स्त्रियाः ॥

शब्दार्थ—

अस्वर्ग्यम्	६.	इससे स्वर्ग नहीं मिलता है	जुगुप्सितम्	५.	निन्दनीय है
अयशस्यम्	७.	अपयश होता है	च	११.	और
च	८.	और यह कर्म	सर्वत्र	४.	सब तरह से
फल्गु	९.	तुच्छ	औपपत्यम्	३.	जार पति की सेवा
कृच्छ्रम्	१०.	क्षणिक	कुल	१.	कुल न
भयावहम्।	१२.	भयदायक है	स्त्रियाः ॥	२.	स्त्रियों के लिये

श्लोकार्थ—कुलीन स्त्रियों के लिये जार पति की सेवा सब तरह से निन्दनीय है। इससे स्वर्ग नहीं मिलता है, तथा अपयश होता है। और यह कर्म तुच्छ, क्षणिक और भयदायक है ॥

सप्तविंशः श्लोकः

श्रवणाद् दर्शनाद् ध्यानान्मयि भावोऽनुकीर्तनात् ।
न तथा सन्निकर्षेण प्रतियात ततो गृहान् ॥२७॥

पदच्छेद— श्रवणात् दर्शनात् ध्यानात् मयि भावः अनु कीर्तनात् ।
न तथा सन्निकर्षेण प्रतियात ततः गृहान् ॥

शब्दार्थ—

श्रवणात्	१.	मेरी लीला के श्रवण	न	९.	नहीं होता है
दर्शनात्	२.	रूप के दर्शन	तथा	७.	वैसा प्रेम
ध्यानात्	४.	ध्यान से	सन्निकर्षेण	८.	पास रहने से
मयि	५.	मेरे प्रति	प्रतियात	१२.	वापिस लौट जाओ
भावः	६.	जैसा प्रेम होता है	ततः	१०.	इसलिये
अनुकीर्तनात् ।	३.	कीर्तन और	गृहान् ॥	११.	तुम घर

श्लोकार्थ—मेरी लीला के श्रवण, रूप के दर्शन, कीर्तन और ध्यान से मेरे प्रति जैसा प्रेम होता है। वैसा प्रेम पास रहने से नहीं होता है। इस लिये तुम घर वापिस लौट जाओ ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

इति विप्रियमाकर्ण्य गोप्यो गोविन्दभाषितम् ।
विषण्णा भग्नसङ्कल्पाश्चिन्तामापुर्दुरत्ययाम् ॥२८॥

पदच्छेद— इति विप्रियम् आकर्ण्य गोप्यः गोविन्द भाषितम् ।
विषण्णाः भग्नसङ्कल्पाः चिन्ताम् आपुः दुरत्ययाम् ॥

शब्दार्थ—

इति	३.	इस प्रकार	विषण्णाः	७.	खिन्न हो गईं
विप्रियम्	४.	अप्रिय	भग्न	९.	टूट गई और वे
आकर्ण्य	६.	सुना तो वे	सङ्कल्पाः	८.	उनकी आशा लता
गोप्यः	१.	गोपियों ने	चिन्ताम्	१०.	चिन्ता के
गोविन्द	२.	श्रीकृष्ण का	आपुः	१२.	डूब गयी
भाषितम् ।	५.	भाषण	दुरत्ययाम् ॥	११.	अथाह सागर में

श्लोकार्थ—गोपियों ने श्रीकृष्ण का इस प्रकार अप्रिय भाषण सुना तो वे खिन्न हो गईं। उनकी आशालता टूट गई। और वे चिन्ता के अथाह सागर में डूब गईं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

कृत्वा मुखान्यव शुचः श्वसनेन शुष्यद्-
बिम्बाधराणि चरणेन भुवं लिखन्त्यः ।
अस्त्रैरुपात्तमषिभिः कुचकुङ्कुमानि
तस्थुर्मृजन्त्य उरुदुःखभराः स्म तूष्णीम् ॥२९॥

पदच्छेद— कृत्वा मुखानिअव शुचः श्वसनेन शुष्यत् बिम्बाधराणि चरणेन भुवम् लिखन्त्यः ।
अस्त्रैः उपात्तमषिभिः कुच कुङ्कुमानि तस्थुः मृजन्त्यः उरु दुःखभरा स्म तूष्णीम् ॥

शब्दार्थ—

कृत्वा	६.	करके	अस्त्रैः	९.	बहते हुये आंसू
मुखानिअव	५.	मुँह नीचे	उपात्तमषिभिः	१०.	काजल के साथ मिलकर
शुचः	३.	शोक से उत्पन्न	कुचकुङ्कुमानि	११.	वक्षःस्थल पर लगी केसर को
श्वसनेन शुष्यत्	४.	लम्बी सांस से सूख गये	तस्थुः	१६.	खड़ी रह गईं
बिम्ब	१.	उनके बिम्बाफल के समान	मृजन्त्यः	१२.	धोने लगे
अधराणि	२.	लाल लाल अधर	उरु	१३.	अत्यधिक
चरणेन् भुवम्	७.	वे अपने पैरों से पृथ्वी के	दुःखभराः	१४.	दुःख के भार के कारण
लिखन्त्यः ।	८.	कुरेदने लगीं	स्म तूष्णीम् ॥	१५.	वे चुप होकर

श्लोकार्थ—उनके बिम्बाफल के समान लाल लाल अधर शोक से उत्पन्न लम्बी साँस से सूख गये । मुँह नीचे करके वे अपने पैरों से धरती कुरेदने लगीं । बहते हुये आँसु काजल के साथ मिल कर वक्षःस्थल पर लगी केसर को धोने लगे । अत्यधिक दुःख के भार के कारण वे चुप होकर खड़ी रह गयीं ॥

त्रिंशः श्लोकः

प्रेष्ठं प्रियेतरमिव प्रतिभाषमाणं कृष्णं तदर्थविनिवर्तितसर्वकामाः ।
नेत्रे विमृज्य रुदितोपहते स्म किञ्चित्संरम्भगद्‌गदगिरोऽब्रुवतानुरक्ताः ॥३०॥

पदच्छेद—प्रेष्ठम् प्रियइतरम् इव प्रति भाषमाणम् कृष्णम् तत् अर्थ विनिवर्तित सर्वकामाः ।
नेत्रे विमृज्य रुदित उपहते स्म किञ्चित् संरम्भगद्‌गद्‌गिरः अब्रुवत अनुरक्ताः ॥

शब्दार्थ—

प्रेष्ठम्	४.	उन्हीं प्रियतम	नेत्रे विमृज्य	१०.	फिर आँसुओं को पोंछ कर
प्रियइतरम् इव	६.	निष्ठुरता भरी सी	रुदित	८.	वे रोने
प्रतिभाषमाणम्	७.	बातों को सुन कर	उपहते स्म	९.	लगीं
कृष्णम्	५.	श्रीकृष्ण की	किञ्चित्संरम्भ	११.	तनिक प्रणय कोप के कारण
तत् अर्थ	१.	जिन श्रीकृष्ण के लिये उन्होंने	गद्‌गद् गिरः	१२.	गद् गद् वाणी से
विनिवर्तित	३.	त्याग कर दिया था	अब्रुवत	१४.	बोलने लगीं
सर्वकामाः ।	२.	समस्त कामनाओं का	अनुरक्ताः ॥	१३.	प्रेम भरे वचन

श्लोकार्थ—जिन श्री कृष्ण के लिये उन्होंने समस्त कामनाओं का त्याग कर दिया था । उन्हीं प्रियतम श्रीकृष्ण की निष्ठुरता भरी-सी बातों को सुनकर वे रोने लगीं। फिर आँसुओं को पोंछकर तनिक प्रणय कोप के कारण प्रेम भरे वचन बोलने लगीं ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

गोप्यः ऊचुः— मैवं विभोऽर्हति भवान् गदितुं नृशंसं
सन्त्यज्य सर्वविषयांस्तव पादमूलम् ।
भक्ता भजस्व दुरवग्रह मा त्यजास्मान्
देवो यथाऽऽदिपुरुषो भजते मुमुक्षून् ॥३१॥

पदच्छेद— मैवम् विभो अर्हति भवान् गदितुम्नृशंसम् सन्त्यज्य सर्वविषयान् तवपादमूलम् ।
भक्ताः भजस्व दुरवग्रह मा त्यज अस्मान् देवः यथा आदि पुरुषः भजतेमुमुक्षून् ॥

शब्दार्थ—

मैवम्	९. नहीं है	भक्ताः	१२. हम भक्तों पर वैसा ही
विभो	५. हे प्रभो !	भजस्व	१३. प्रेम करिये
अर्हति	८. योग्य	दुरवग्रह	१. हे स्वच्छन्द प्रभो !
भवान्	६. आपको	मा त्यज	११. परित्याग मत करिये
गदितुम्नृशंसम्	७. क्रूर वचन बोलना	अस्मान्	१०. आप हमारा
सन्त्यज्य	३. छोड़ कर	देवः	१५. भगवान् नारायण
सर्वविषयान्	२. हमने समस्त विषयों को	यथा आदि पुरुषः	१४. जैसे आदि पुरुष
तवपादमूलम् ।	४. आपके चरणों को अपनाया है	भजते मुमुक्षून् ॥	१६. मुमुक्षुओं से प्रेम करते हैं

श्लोकार्थ—हे स्वच्छन्द प्रभो ! हमने समस्त विषयों को छोड़ कर आपके चरणों को अपनाया है। हे प्रभो ! आपको क्रूर वचन बोलना योग्य नहीं है। आप हमारा परित्याग मत करिये। हम भक्तों पर वैसा ही प्रेम करिये, जैसे आदि पुरुष भगवान् नारायण मुमुक्षुओं से प्रेम करते हैं।

द्वात्रिंशः श्लोकः

यत्पत्यपत्यसुहृदामनुवृत्तिरङ्ग स्त्रीणां स्वधर्म इति धर्मविदा त्वयोक्तम् ।
अस्त्वेवमेतदुपदेशपदे त्वयीशे प्रेष्ठो भवांस्तनुभृतां किल बन्धुरात्मा ॥३२॥

पदच्छेद— यत् पति अपत्य सुहृदाम् अनुवृत्तिः अङ्ग स्तीणाम् स्वधर्म इतिधर्मविदा त्वयाउक्तम् ।
अस्तु एवम् एतत् उपदेश पदे त्वयि ईशे प्रेष्ठः भवान् तनुभृताम् किल बन्धुः आत्मा ॥

शब्दार्थ—

यत् पति अपत्य	४. कि पति-पुत्र और	अस्तु एवम्	९. आपने ठीक ही कहा है।
सुहृदाम् अनुवृत्तिः	५. भाई-बन्धुओं की सेवा ही	एतत् उपदेश	१३. इस उपदेश के
अङ्ग	१. हे श्याम सुन्दर	पदे त्वयि ईशे	१४. विषय आप परमेश्वर ही हैं
स्तीणाम्	६. स्त्रियों का	प्रेष्ठः भवान्	११. आप प्रियतम
स्वधर्म	७. स्वधर्म है	तनुभृताम्	१०. शरीरधारियों के लिये
इति धर्मविदा	२. धर्म के जानकार यह	किल	८. निश्चय ही
त्वया उक्तम् ।	३. आपके द्वारा जो कहा गया है	बन्धुः आत्मा ॥	१२. बन्धु और आत्मा होने से

श्लोकार्थ—हे श्यामसुन्दर ! धर्म के जानकार यह आपके द्वारा जो कहा गया है कि पति-पुत्र और भाई-बन्धुओं की सेवा ही स्त्रियों का स्वधर्म है। निश्चय ही आपने ठीक ही कहा है। शरीर धारियों के लिये आप प्रियतम, बन्धु और आत्मा होने से इस उपदेश के विषय आप परमेश्वर ही हैं ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

कुर्वन्ति हि त्वयि रतिं कुशलाः स्व आत्मन्
नित्यप्रिये पतिसुतादिभिरार्तिदैः किम् ।
तन्नः प्रसीद परमेश्वर मा स्म छिन्द्या
आशां भृतां त्वयि चिरादरविन्दनेत्र ॥३३॥

पदच्छेद—कुर्वन्ति हि त्वयि रतिम् कुशलाः स्वआत्मन् नित्यप्रिये पति सुतआदिभिः आर्तिदैः किम् । ततनः प्रसीद परमेश्वर मा स्म छिन्द्याः आशाम् भृताम् त्वयि चिरात् अरविन्दनेत्र ॥

शब्दार्थ—कुर्वन्ति	४. करते हैं ! क्योंकि	किम् ।	८. क्या प्रयोजन है
हित्वयि रतिम्	३. आप से हो प्रेम	तत् नः प्रसीद	१०. इसलिये आप हम पर प्रसन्न हों
कुशलाः	२. निपुण महापुरुष	परमेश्वर	९. हे परमेश्वर !
स्वआत्मन्	१. अपने आत्म ज्ञान में	मास्मछिन्द्याः	१४. छेदन मत करो
नित्य प्रिये	५. आप नित्य प्रिय हैं	आशाम् भृताम्	१३. पाली-पोसी आशा का
पति सुतआदिभिः	७. पति, पुत्रादि से उन्हें	त्वयिचिरात्	१२. तुम्हारे प्रति चिरकाल से
आर्तिदैः	६. अनित्य दुःखद	अरविन्दनेत्र ॥	११. हे कमल नयन !

श्लोकार्थ—अपने आत्मज्ञान में निपुण महापुरुष आपसे ही प्रेम करते हैं। क्योंकि आप नित्य प्रिय हैं। अनित्य दुःखद पति, पुत्रादि से उन्हें क्या प्रयोजन है। हे परमेश्वर ! इसलिये आप हम पर प्रसन्न हों। हे कमल नयन ! तुम्हारे प्रति चिरकाल से पाली-पोसी आशा का छेदन मत करो ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

चित्तं सुखेन भवतापहृतं गृहेषु यन्निर्विशत्युत करावपि गृह्यकृत्ये ।
पादौ पदं न चलतस्तव पादमूलाद् यामः कथं व्रजमथो करवाम किं वा ॥३४॥

पदच्छेद— चित्तम् सुखेन भवता अपहृतम् गृहेषु यत् निर्विशति उत करौ अपिगृह्यकृत्ये । पादौ पदम् न चलतः तव पाद मूलात् यामः कथम् व्रजम् अथो करवाम किम् वा ॥

शब्दार्थ—चित्तम् सुखेन	५. हमारा चित्त सुख पूर्वक	पादौ पदम्	९. हमारे पैर एक पग भी
भवता अपहृतम्	७. आपने चुरा लिया है	न चलतः	१०. नहीं चलना चाहते हैं
गृहेषु	६. घर में लगा रहता था उसे	तवपाद मूलात्	८. आपके चरणों का आश्रय छोड़कर
यत्	१. हे श्याम सुन्दर ! जो	यामः कथम्व्रजम्	११. हम व्रज में कैसे जायें
निर्विशति उत	४. लगे रहते थे। और जो	अथो करवाम	१४. करें
करौ	२. हमारे हाथ	किम्	१३. क्या
अपिगृह्यकृत्ये ।	३. घर के कामों में	वा ॥	१२. अथवा वहाँ जाकर

श्लोकार्थ—हे श्याम सुन्दर ! जो हमारे हाथ घर के कामों में लगे रहते थे और जो हमारा चित्त सुख-पूर्वक घर में लगा रहता था। उसे आपने चुरा लिया है। आपके चरणों का आश्रय छोड़कर हमारे पैर एक पग भी नहीं चलना चाहते हैं। हम व्रज में कैसे जायें। अथवा वहाँ जाकर क्या करें ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

सिञ्चाङ्ग नस्त्वदधरामृतपूरकेण हासावलोककलगीतजहृच्छयाग्निम् ।
नो चेद् वयं विरहजाग्न्युपयुक्तदेहा ध्यानेन याम पदयोः पदवीं सखे ते ॥३५॥

पदच्छेद— सिञ्च अङ्ग नस्त्वद् अधरामृत पूरकेण हास अवलोक कलगीतज हृच्छय अग्निम् ।
नो चेत् वयम् विरहज अग्नि उपयुक्त देहाः ध्यानेन याम पदयोः पदवीम् सखे ते ॥

शब्दार्थ—			
सिञ्च	८. बुझा दो !	नोचेत् वयम्	१०. अन्यथा हम आपके
अङ्ग	१. हे श्याम सुन्दर ! हमारे	विरहज अग्नि	११. वियोग की अग्नि में अपना
नस्त्वद्	३. आप अपने	उपयुक्त देहाः	१२. शरीर जलाकर
अधरामृत	४. अधरों की	ध्यानेन	१३. ध्यान के द्वारा
पूरकेण	५. रसधारा	याम	१६. प्राप्त कर लेंगी
हास अवलोक	६. हास चितवन और	पदयोः पदवीम्	१५. चरण कमलों में स्थान
कलगीतज	७. सुन्दर गीतों से	सखे	६. हे प्यारे सखा
हृच्छय अग्निम् ।	२. हृदय की अग्नि को	ते ॥	१४. आपके

श्लोकार्थ—हे श्यामसुन्दर ! हमारे हृदय की अग्नि को आप अपने अधरों की रस-धारा, हास, मनोहर चितवन और सुन्दर गीतों से बुझा दो । हे प्यारे सखा ! अन्यथा हम आपके वियोग की अग्नि में अपना शरीर जलाकर ध्यान के द्वारा आपके चरण कमलों में स्थान प्राप्त कर लेंगी ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

यर्ह्यम्बुजाक्ष तव पादतलं रमाया दत्तक्षणं क्वचिदरण्यजनप्रियस्य ।
अस्प्राक्ष्म तत्प्रभृति नान्यसमक्षमङ्ग स्थातुं त्वयाभिरमिता बत पारयामः ॥३६॥

पदच्छेद—यर्हि अम्बुजाक्ष तव पाद तलम् रमायाः दत्तक्षणम् स्थातुम् क्वचित् अरण्यजन प्रियस्य ।
अस्प्राक्ष्म तत् प्रभृति न अन्यसमक्षम् अङ्ग स्थातुम् त्वया अभिरमिताः बत पारयामः ॥

शब्दार्थ—			
यर्हि	२. जब से	अस्प्राक्ष्म	६. स्पर्श किया है
अम्बुजाक्ष तव	१. हे कमल नयन ! आपने	तत् प्रभृति	१३. तभी से लेकर आज तक
पाद तलम्	४. जिन चरणों की सेवा का	न अन्यसमक्षम्	१४. अन्य किसी के सामने
रमायाः	३. लक्ष्मी जी को भी	अङ्ग	१०. हे श्याम सुन्दर !
दत्तक्षणम्	६. अवसर दिया है	स्थातुम्	१५. खड़ी होने में भी हम
क्वचित्	५. कभी-कभी	त्वया अभिरमिताः	१२. आपसे आनन्दित होकर
अरण्यजन	७. हम वनवासियों ने	बत	११. हर्ष का विषय है कि
प्रियस्य ।	८. प्रेम से जब से उनका	पारयामः ॥	१६. समर्थ नहीं हैं

श्लोकार्थ—हे कमलनयन ! आपने जब से लक्ष्मी जी को भी जिन चरणों की सेवा का कभी-कभी अवसर दिया है, हम वनवासियों ने प्रेम से जब से उनका स्पर्श किया है, हे श्याम सुन्दर ! हर्ष का विषय है कि आपसे आनन्दित होकर तभी से लेकर आज तक अन्य किसी के सामने खड़ी होने में भी हम समर्थ नहीं हैं ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

श्रीर्यत्पदाम्बुजरजश्चकमे तुलस्या लब्ध्वापि वक्षसि पदं किल भृत्यजुष्टम् ।
यस्याः स्ववीक्षणकृतेऽन्यसुरप्रयासस्तद्वद् वयं च तव पादरजः प्रपन्नाः ॥३७॥

पदच्छेद— श्रीः यत् पदाम्बुज रजः चकमे तुलस्याः लब्ध्वा अपि वक्षसि पदम् किल भृत्य जुष्टम् ।
यस्याः स्ववीक्षणकृते अन्यसुर प्रयासः तत्वत् वयम् च तव पादरजः प्रपन्नाः ॥

शब्दार्थ—श्रीः	५. वही लक्ष्मी जी	यस्याः	१. जिन लक्ष्मी जी का
यत् पदाम्बुज	१०. आपके चरण कमलों का	स्ववीक्षणकृते	२. कृपा कटाक्ष पाने के लिये
रजः चकमे	११. रज पाने की अभिलाषा करती हैं	अन्यसुर	३. बड़े-बड़े देवता
तुलस्याः	८. अपनी सौत तुलसी के साथ	प्रयासः	४. तपस्या करते रहते हैं
लब्ध्वाअपि	७. प्राप्त कर लेने पर भी	तत् वत्	१२. उन्हीं के समान
वक्षसि पदम्	६. आपके वक्षः स्थल में स्थान	वयम् च तव	१३. हम भी आप की
किल भृत्य जुष्टम् ।	९. निश्चय ही भक्तों द्वारा सेवित	पादरजःप्रपन्नाः ॥	१४. चरण रज की शरण में आई हैं

श्लोकार्थ—जिन लक्ष्मी जी का कृपा कटाक्ष पाने के लिये बड़े-बड़े देवता तपस्या करते रहते हैं। वही लक्ष्मी जी आप के वक्षः स्थल में स्थान प्राप्त कर लेने पर भी अपनी सौत तुलसी के साथ निश्चय ही भक्तों द्वारा सेवित आपके चरण कमलों की रज पाने की अभिलाषा करती हैं। उन्हीं के समान हम भी आपकी चरण रज की शरण में आई हैं ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

तन्नः प्रसीद वृजिनार्दन तेऽङ्घ्रिमूलं प्राप्ता विसृज्य वसतीस्त्वदुपासनाशाः ।
त्वत्सुन्दरस्मितनिरीक्षणतीव्रकामतप्तात्मनां पुरुषभूषण देहि दास्यम् ॥३८॥

पदच्छेद— तत् नः प्रसीद वृजिन अर्दन ते अङ्घ्रिमूलम् प्राप्ता विसृज्य वसतीः त्वद् उपासनाशाः ।
त्वत् सुन्दर स्मित निरीक्षण तीव्रकामतप्त आत्मानम् पुरुष भूषण देहि दास्यम् ॥

शब्दार्थ—तत्	१. इसलिये	त्वत् सुन्दर	९. आप अपने सुन्दर
नः प्रसीद	३. आप हम पर प्रसन्न हों	स्मित	१०. मुसकान का
वृजिन अर्दन	२. हे दुःख-नाशक	निरीक्षण	११. दर्शन करने की
ते अङ्घ्रिमूलम्	६. आपके चरणों में	तीव्रकामतप्त	१२. बलवती आकांक्षावाली तप्त
प्राप्ताः	७. आयी हैं	आत्मानम्	१३. हृदय हम गोपियों को
विसृज्य वसतीः	४. सब कुछ छोड़कर	पुरुष भूषण	८. हे पुरुषश्रेष्ठ !
त्वद् उपासनाशाः ।	५. अपकी सेवा की आशा से	देहि दास्यम् ॥	१४. अपनी दासी बनाइये

श्लोकार्थ—इसलिये हे दुःख-नाशक प्रभो ! आप हम पर प्रसन्न होइये। हम सब कुछ छोड़कर कमलों आपकी सेवा की आशा से आपके चरणों में आयी हैं। हे पुरुषश्रेष्ठ ! आप अपने सुन्दर मुसकान का दर्शन करने की बलवती आकांक्षावाली, तप्त हृदय, हम गोपियों को अपनी दासी बनाइये ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

वीक्ष्यालकावृतमुखं तव कुण्डलश्रीगण्डस्थलाधरसुधं हसितावलोकम् ।
दत्ताभयं च भुजदण्डयुगं विलोक्य वक्षः श्रियैकरमणं च भवाम दास्यः ॥३९॥

पदच्छेद—वीक्ष्य अलक आवृत मुखम् तव कुण्डल श्रीगण्डस्थल अधर सुधम् हसित अवलोकम् ।
दत्त अभयम् च भुज दण्ड युगम् विलोक्य वक्षः श्रियैकरमणम् च भवाम दास्यः ।।

शब्दार्थ वीक्ष्य	८.	देखकर	दत्तअभयम् च	९.	और भक्तों को अभय देने वाले
अलक आवृत	१.	घुंघराले केशों से घिरा	भुजदण्ड	११.	भुजदण्डों को
मुखम् तव	२.	आपका मुख	युगम्	१०.	दोनों
कुण्डल श्री	४.	कुण्डलों की शोभा	विलोक्य	१२.	देखकर
गण्डस्थल	३.	गण्ड-स्थल पर	वक्षः	१४.	वक्षः स्थल देखकर
अधरसुधाम्	५.	अधरों में अमृत और	श्रियैकरमणम्च	१३.	और एकमात्र लक्ष्मी जी का विहार
हसित	६.	मधुर हास्य तथा	भवाम	१६.	हो गई हैं
अवलोकम् ।	७.	तिरछी चितवन	दास्यः ।।	१५.	हम आपकी दासी

श्लोकार्थ—घुंघराले केशों से घिरा आपका मुख गण्डस्थल पर कुण्डलों की शोभा अधरों में अमृत और मधुर हास्य तथा तिरछी चितवन देखकर और भक्तों को अभय देने वाले भुजदण्डों को देखकर और एकमात्र लक्ष्मी जी का विहार वक्षः स्थल देखकर हम आपकी दासी हो गयी हैं ।।

चत्वारिंशः श्लोकः

का स्त्र्यङ्ग ते कलपदायतमूर्च्छितेन सम्मोहितार्यचरितान्न चलेत्त्रिलोक्याम् ।
त्रैलोक्यसौभगमिदं च निरीक्ष्य रूपं यद् गोद्विजद्रुममृगाः पुलकान्यबिभ्रन् ।४०

पदच्छेद—का स्त्री अङ्ग ते कल पद आयत मूर्च्छितेन सम्मोहित आर्यचरितात् न चलेत् त्रिलोक्याम् ।
त्रैलोक्य सौभगम् इदम् च निरीक्ष्य रूपम् यत् गोद्विज द्रुममृगाः पुलकानि अबिभ्रन् ।।

शब्दार्थ—का स्त्री	३.	ऐसी कौन स्त्री है	त्रैलोक्य	१४.	तीनों लोकों में
अङ्ग	१.	हे श्याम सुन्दर	सौभगम् इदम्	१५.	सुन्दर इस
ते	४.	जो आपकी वंशी की	च	९.	और
कलपद आयत	५.	मधुर पदों विविध	निरीक्ष्यरूपम्	१६.	रूपकोदेखकर आसक्त नहोजाय
मूर्च्छितेन	६.	मूर्च्छनाओं से	यत् गोद्विज	१०.	जो गाय ब्राह्मण
सम्मोहिता	७.	मोहित होकर	द्रुम मृगाः	११.	वृक्ष पशु-पक्षियों तक को
आर्यचरितात्नचलेत्	८.	आर्य मर्यादा से विचलित न होगी	पुलकानि	१२.	आनन्द
त्रिलोक्याम् ।	२.	त्रिलोकी में	अबिभ्रन् ।।	१३.	प्रदान करने वाले

श्लोकार्थ—हे श्याम सुन्दर ! त्रिलोकी में ऐसी कौन स्त्री है । जो आपकी वंशी के मधुर पदों की त्रिविध मूर्च्छनाओं से मोहित होकर आर्य, मर्यादा से विचलित न होगी । और जो गाय ब्राह्मण वृक्ष पशु, पक्षियों तक को आनन्द प्रदान करने वाले तीनों लोकों में सुन्दर इस रूप को देखकर आसक्त न हो जाय ।।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

व्यक्तं भवान् व्रजभयार्तिहरोऽभिजातो देवो यथाऽऽदिपुरुषः सुरलोकगोप्ता ।
तन्नो निधेहि करपङ्कजमार्तबन्धो तप्तस्तनेषु च शिरस्सु च किङ्करीणाम् ॥४१॥

पदच्छेद—व्यक्तम् भवान् व्रजभय आर्तिहरः अभिजातः देवः यथा आदि पुरुषः सुरलोक गोप्ता ।
तत् नः निधेहि कर पङ्कजम् आर्तबन्धो तप्तस्तनेषु च शिरस्सु च किङ्करीणाम् ॥

शब्दार्थ—

व्यक्तम्	१.	यह स्पष्ट ही है कि	तत्	१०.	इसलिये
भवान्	५.	आप भी	नः	११.	हम
व्रजभय	६.	व्रज वासियों का भय और	निधेहि	१६.	स्थापित करिये
आर्तिहरः	७.	दुःखहरण करने के लिये ही	करपङ्कजम्	१५.	कर कमल
अभिजातः	८.	उत्पन्न हुये हैं	आर्तबन्धो	९.	हे दीनबन्धु
देवः	३.	नारायण	तप्तस्तनेषु च	१३.	सन्तप्त वक्ष स्थल
यथा आदिपुरुषः	२.	जैसे आदि पुरुष	शिरस्सु च	१४.	और सिरों पर
सुरलोक गोप्ता	४.	देवलोक के रक्षक हैं वैसे ही	किङ्करीणाम् ॥	१२.	सेविकाओं के

श्लोकार्थ—यह स्पष्ट ही है कि जैसे आदि पुरुष नारायण देवलोक के रक्षक हैं, वैसे ही आप भी व्रजवासियों का भय और दुःखहरण करने के लिये ही उत्पन्न हुये हैं। हे दीनबन्धु ! इसलिये हम सेविकाओं के सन्तप्त वक्षःस्थल और सिरों पर आप अपना कर कमल स्थापित करिये ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— **इति विक्लवितं तासां श्रुत्वा योगेश्वरेश्वरः ।**
प्रहस्य सदयं गोपीरात्मारामोऽप्यरीरमत् ॥४२॥

पदच्छेद— इति विक्लवितम् तासाम् श्रुत्वा योगेश्वर ईश्वरः ।
प्रहस्य सदयम् गोपीः आत्मा रामः अपि अरीरमत् ॥

शब्दार्थ—

इति	६.	इस प्रकार	प्रहस्य	९.	हँस कर
विक्लवितम्	७.	व्याकुलताभरी वाणी	सदयम्	१०.	दयापूर्वक
तासाम्	५.	गोपियों की	गोपीः	११.	गोपियों के साथ
श्रुत्वा	८.	सुनकर (और)	आत्मारामः	३.	अपने आपमें ही रमण करने वाले
योगेश्वर	१.	योगेश्वरों के भी	अपि	४.	होने पर भी
ईश्वरः ।	२.	ईश्वर श्री कृष्ण ने	अरीरमत् ॥	१२.	क्रीडा आरम्भ की

श्लोकार्थ—योगेश्वरों के भी ईश्वर श्री कृष्ण ने अपने आप में ही रमण करने वाले होने पर भी गोपियों की इस प्रकार व्याकुलता भरी वाणी सुनकर और हँसकर दयापूर्वक गोपियों के साथ क्रीडा आरम्भ की ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

ताभिः समेताभिरुदारचेष्टितः प्रियेक्षणोत्फुल्लमुखीभिरच्युतः ।
उदारहासद्विजकुन्ददीधितिर्व्यरोचतैणाङ्क इवोडुभिर्वृतः ॥४३॥

पदच्छेद— ताभिः समेताभिः उदार चेष्टितः प्रियईक्षण उत्फुल्ल मुखीभिः अच्युतः ।
उदारहास द्विज कुन्द दीधितिः व्यरोचत एणाङ्क इव उडुभिः वृतः ॥

शब्दार्थ—

ताभिः	७. उन गोपियों के	उदारहास	९. मधुर हंसी के कारण
समेताभिः	८. साथ लीला की । तब	द्विज	१०. दाँतों के
उदार	१. उदार	कुन्द	११. कुन्द पुष्प के समान
चेष्टितः	२. लीला तथा	दीधितिः	१२. चमक से वे
प्रियईक्षण	३. प्रेम पूर्ण चितवन वाले	व्यरोचत	१६. सुशोभित हुये
उत्फुल्ल	५. प्रसन्न	एणाङ्क इव	१५. चन्द्रमा के समान
मुखीभिः	६. मुख वाली	उडुभिः	१३. तारिकाओं से
अच्युतः ।	४. श्रीकृष्ण ने	वृतः ॥	१४. घिरे

श्लोकार्थ—उदार लीला तथा प्रेम पूर्ण चितवन वाले श्रीकृष्ण ने प्रसन्न मुख वाली उन गोपियों के साथ लीला की । तब मधुर हँसी के कारण दाँतों के कुन्दपुष्प के समान चमक से वे तारिकाओं से घिरे चन्द्रमा के समान सुशोभित हुये ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

उपगीयमान उद्गायन् वनिताशतयूथपः ।
मालां बिभ्रद् वैजयन्तीं व्यचरन्मण्डयन् वनम् ॥४४॥

पदच्छेद— उपगीयमानः उद्गायन् वनिता शत यूथपः ।
मालाम् बिभ्रद् वैजयन्तीम् व्यचरत् मण्डयन् वनम् ॥

शब्दार्थ—

उपगीयमानः	१०. कभी गोपियाँ कृष्ण के गीत गाती और	मालाम्	५. माला
उद्गायन्	११. कभी श्रीकृष्ण गोपियों के गीत गाते	बिभ्रद्	६. पहने
वनिता	१. गोपियों के	वैजयन्तीम्	४. वैजयन्ती
शत	२. शत-शत	व्यचरत्	९. विचरण करने लगे
यूथपः ।	३. यूथों के स्वामी श्रीकृष्ण	मण्डयन्	८. शोभायमान करते हुये
		वनम् ॥	७. वृन्दावन को

श्लोकार्थ—गोपियों के शत-शत यूथों के स्वामी श्रीकृष्ण वैजयन्ती माला पहने वृन्दावन को शोभायमान करते हुये विचरण करने लगे । कभी गोपियाँ श्रीकृष्ण के गीत गातीं और कभी श्रीकृष्ण गोपियों के गीत गाते थे ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

नद्याः पुलिनमाविश्य गोपीभिर्हिमवालुकम् ।
रेमे तत्तरलानन्दकुमुदामोदवायुना ॥४५॥

पदच्छेद— नद्याः पुलिनम् आविश्य गोपीभिः हिम बालुकम् ।
रेमे तत् तरल आनन्द कुमुद आमोद वायुना ॥

शब्दार्थ—

नद्याः	२. यमुना जी के	रेमे	१२. गोपियों के साथ क्रीड़ा की
पुलिनम्	३. किनारे	तत्	७. यमुना जी
आविश्य	६. जाकर	तरल आनन्द	८. शीतल आनन्द दायक
गोपीभिः	१. गोपियों के साथ	कुमुद	९. कुमुदिनी की
हिम	४. चमकीली	आमोद	१०. सुगन्ध से सुवासित
बालुकम् ।	५. बालू में	वायुना ॥	११. वायु में

श्लोकार्थ— भगवान् श्रीकृष्ण ने तब गोपियों के साथ यमुना जी के किनारे चमकीली बालू में जाकर यमुना जी की शीतल आनन्द दायक कुमुदिनी की सुगन्ध से सुवासित वायु में गोपियों के साथ क्रीड़ा की ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

बाहुप्रसारपरिरम्भकरालकोरुनीवीस्तनालभननर्मनखाग्रपातैः ।
क्ष्वेल्यावलोकहसितैर्व्रजसुन्दरीणामुत्तम्भयन् रतिपतिं रमयाञ्चकार ॥४६॥

पदच्छेद— बाहुप्रसार परिरम्भ कर अलक ऊरु नीवी स्तन आलभन नर्म नखाग्रपातैः ।
क्ष्वेल्या अवलोक हसितैः व्रज सुन्दरीणाम् उत्तम्भयन् रति पतिम् रमयाम् चकार ॥

शब्दार्थ—

बहुप्रसार	१. हाथ फैलाना	**क्ष्वेल्या**	९. विनोद पूर्ण
परिरम्भ	२. आलिङ्गन करना	**अवलोक**	१०. चितवन से देखना और
कर	३. हाथ दबाना	**हसितैः**	११. मुसकान आदि के द्वारा
अलक ऊरु	४. चोटी जाँघ	**व्रज सुन्दरीणाम्**	१२. व्रज की सुन्दरियों को
नीवी स्तन	५. नीवी और स्तन का	**उत्तम्भयन्**	१३. उत्तेजित करके
आलभन	६. स्पर्श करना	**रतिपतिम्**	१४. श्रीकृष्ण ने उनके साथ
नर्म	७. विनोद करना	**रमयाम्**	१५. रमण
नखाग्रपातैः ।	८. नखक्षत करना	**चकार ॥**	१६ किया ॥

श्लोकार्थ—हाथ फैलाना, आलिङ्गन करना, हाथ दबाना, चोटी, जाँघ, नीवी और स्तन का स्पर्श करना, विनोद करना, नख क्षत करना, विनोद पूर्ण चितवन से देखना और मुसकान आदि के द्वारा व्रज की सुन्दरियों को उत्तेजित करके श्रीकृष्ण ने उनके साथ रमण किया ॥

सप्तचत्वारिंश श्लोकः

एवं भगवतः कृष्णाल्लब्धमाना महात्मनः ।
आत्मानं मेनिरे स्त्रीणां मानिन्योऽभ्यधिकं भुवि ॥४७॥

पदच्छेद— एवम् भगवतः कृष्णात् लब्धमानाः महात्मनः ।
आत्मानम् मेनिरे स्त्रीणाम् मानिन्यः अभ्यधिकम् भुवि ॥

शब्दार्थ—

एवम्	४. इस प्रकार	आत्मानम्	६. उन्होंने अपने को
भगवतः	२. भगवान्	मेनिरे	१०. माना और वे
कृष्णात्	३. श्रीकृष्ण के द्वारा	स्त्रीणाम्	८. स्त्रियों में
लब्धमानाः	५. सम्मान पाकर	मानिन्यः	११. मानवती हो गईं
महात्मनः ।	१. उदार शिरोमणि	अभ्यधिकम्	९. सबसे श्रेष्ठ
		भुवि ॥	७. पृथ्वी की

श्लोकार्थ—उदारशिरोमणि भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा इस प्रकार सम्मान पाकर उन्होंने अपने को पृथ्वी की स्त्रियों में सबसे श्रेष्ठ माना और वे मानवती हो गईं ॥

अष्टचत्वारिंश श्लोकः

तासां तत् सौभगमदं वीक्ष्य मानं च केशवः ।
प्रशमाय प्रसादाय तत्रैवान्तरधीयत ॥४८॥

पदच्छेद— तासाम् तत् सौभगमदम् वीक्ष्य मानम् च केशवः ।
प्रशमाय प्रसादाय तत्र एव अन्तर् अधीयत ॥

शब्दार्थ—

तासाम्	१. उनके	प्रशमाय	७. उनका गर्व शान्त करने के लिये
तत्	२. उस	प्रसादाय	८. और प्रसन्नकरने के लिये
सौभगमदम्	३. सुहाग के गर्व को	तत्र	९. वहाँ पर
वीक्ष्य	५. देखकर	एव	१०. ही
मानम् च	४. और मान को	अन्तर्	११. अन्तर्धान
केशवः ।	६. श्रीकृष्ण ने	अधीयत ॥	१२. हो गये

श्लोकार्थ—उनके उस सुहाग के गर्व को और मान को देखकर श्रीकृष्ण ने उनका गर्व शान्त करने के लिये और (मानमर्दन करके) प्रसन्न करने के लिये वहीं पर अन्तर्धान हो गये ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमे स्कन्धे पूर्वार्धे भगवतो रास-क्रीडावर्णनं नाम एकोनत्रिंशः अध्यायः ॥२९॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

त्रिंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— अन्तर्हिते भगवति सहसैव व्रजाङ्गनाः ।
अतप्यंस्तमचक्षाणाः करिण्य इव यूथपम् ॥१॥

पदच्छेद— अन्तर्हिते भगवति सहसा एव व्रजाङ्गनाः ।
अतप्यन् तम् अचक्षाणाः करिण्यः इव यूथपम् ॥

शब्दार्थ—

अन्तर्हिते	४.	अन्तर्धान हो जाने पर	अतप्यन्	७.	विरह ज्वाला में वैसे ही जलने लगीं
भगवति	१.	भगवान् के	तम् अचक्षाणाः	६.	उन्हें न देखकर
सहसा	२.	अकस्मात्	करिण्यः	९.	हथिनियाँ
एव	३.	ही	इव	८.	जैसे
व्रजाङ्गनाः ।	५.	व्रज युवतियाँ	यूथपम् ॥	१०.	हाथी के बिना जलती हैं

श्लोकार्थ—भगवान् के अकस्मात् ही अन्तर्धान हो जाने पर व्रज युवतियाँ उन्हें न देखकर विरह ज्वाला में वैसे ही जलने लगीं जैसे हथिनियाँ हाथी के बिना जलती हैं ॥

द्वितीयः श्लोकः

गत्यानुरागस्मितविभ्रमेक्षितैर्मनोरमालापविहारविभ्रमैः ।
आक्षिप्तचित्ताः प्रमदा रमापतेस्तास्ता विचेष्टा जगृहुस्तदात्मिकाः ॥२॥

पदच्छेद— गत्या अनुराग स्मित विभ्रम ईक्षितैः मनोरमआलाप विहार विभ्रमैः ।
आक्षिप्त चित्ताः प्रमदाः रमापतेः ताःताः विचेष्टाः जगृहुः तत् आत्मिकाः ॥

शब्दार्थ—

गत्या अनुराग	२.	चाल, प्रेम भरी	आक्षिप्तचित्ताः	१०.	चित्त चुरा लिया था
स्मितविभ्रम	३.	मुसकान, विलास भरी	प्रमदाः	९.	उन युवतियों का
ईक्षितैः	४.	चितवन	रमापतेः	१.	भगवान् श्रीकृष्ण की
मनोरम	५.	मनोरम	ताः ताः	११.	श्रीकृष्ण की उन-उन
आलाप	६.	प्रेमालाप और	विचेष्टाः	१२.	चेष्टाओं को
विहार	८.	लीलाओं ने	जगृहुः	१४.	करने लगीं ।
विभ्रमैः ।	७.	भिन्न-भिन्न प्रकार की	तत् आत्मिकाः ॥	१३.	वे कृष्ण स्वरूप होकर

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण की चाल, प्रेम भरी मुसकान, विलास भरी चितवन, मनोरम प्रेमालाप और भिन्न-भिन्न प्रकार की लीलाओं ने उन युवतियों का चित चुरा लिया था । श्रीकृष्ण की उन-उन चेष्टाओं को वे कृष्ण स्वरूप होकर करने लगीं ॥